प्राक्कथन

मैं माध्यमिक स्तर पर अध्यापन कर रहा हूँ। माध्यमिक स्तर पर भी हिंदी विषय के अंतर्गत अनुसंधान करना जरूरी है। सौभाग्यवश मैंने एम.फिल (हिंदी) के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। वैसे मैं शिक्षणशास्त्र का भी स्नातकोत्तर छात्र हूँ। स्व. डॉ.वास्कर, डॉ. श्रीमती वास्कर, डॉ. सौ. सुलोचना देशपांडे जी से चर्चा के उपरांत मैंने अनुसंधान का विषय निश्चित किया-

'हिंदी भाषा एवं आशय की दृष्टि से कक्षा नौवीं एवं कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन'

मैंने अध्यापन करते समय अनुभव किया कि दसवीं कक्षा उत्तीर्ण छात्र भाषा एवं आशय की दृष्टि से प्रभावित होते हैं या नहीं? क्या भाषा समृद्ध बनाने के लिए पाठ्यपुस्तक का उपयोग किया जाता है? आशय समझने के लिए पाठ्यपुस्तकें कैसे सहायक सिद्ध होते है? क्या छात्र पूरी निर्भयता से हिंदी भाषा को अभिव्यक्त कर सकते हैं? ऐसे कई प्रश्न मेरे मन में उत्पन्न हुए। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण सभी छात्रों का भाषिक एवं आशय की दृष्टि से विकास होता है या नहीं? इस पर अनुसंधान करना मेरा उद्देश्य है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित किया है। प्रथम अध्याय है- पाठ्यपुस्तक निर्मिती प्रक्रिया। इसमें पाठ्यचर्या: अर्थ एवं परिभाषा, पाठ्यचर्या का ढाँचा, पाठ्यक्रम- अर्थ एवं परिभाषा, कक्षा नौवीं एवं दसवीं का पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक: पाठ्यपुस्तक की आवश्यकता, पाठ्यपुस्तक की समीक्षा, पाठ्यपुस्तक निर्मिती प्रक्रिया इन विषयों पर विचार किया है। क्या पाठ्यपुस्तकों से छात्रों का भाषिक, बौद्धिक विकास होता है?, आदि विषयों पर विचार किया है।

द्वितीय अध्याय में भाषा का विकास कैसे हुआ है? छात्रों का विकास करने में भाषा किस प्रकार सहायक सिद्ध होती है? माध्यमिक स्तर पर कक्षा नौवीं एवं दसवीं स्तर पर भाषा का उपयोग कैसे होता है?, हिंदी भाषा की संरचना की जानकारी तथा उससे लाभ आदि विषयों पर जानकारी प्रस्तुत की है। द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षा के उद्देश्य, द्वितीय भाषा हिंदी अध्यापन के उद्देश्य की जानकारी स्पष्ट की है।

तृतीय अध्याय में भाषिक उद्देश्यों के आधार पर कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन किया है। इसमें कक्षा नौवीं- श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन, कक्षा दसवीं-श्रवण,भाषण वाचन, लेखन आदि विषयों पर जानकारी प्रस्तुत की है।

चतुर्थ अध्याय में कक्षा नौवीं एवं दसवीं के पाठ्यपुस्तकों का आशय के आधार पर अनुशीलन किया है। पाठ्यपुस्तक में विभिन्न प्रकार की आशय समृद्धि प्रतीत होती है। आशय को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए प्रयास किया है। आशय की आवश्यकता, आशय: अर्थ एवं परिभाषा, पाठ्यपुस्तक के आशय के प्रकार दिए है। आशय की दृष्टि से पाठों का विवेचन किया है।

पंचम अध्याय में कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन और अध्यापन संबंधी दिशाएँ की जानकारी दी है। हिंदी भाषा एवं आशय के आधार पर नमूना छात्रोंकों, शिक्षक, प्रशिक्षकों, अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों से साक्षात्कार लिए हैं, उनसे निश्चित निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास किया है।

उसके बाद उपसंहार और संदर्भ ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का कार्य पूर्ण करने के लिए डॉ.सौ. सुलोचना श्रीहरी देशपांडे जी का सफल मार्गदर्शन मिला है। स्व. डॉ. आनंद वास्कर, श्रीमती.डॉ. पुष्पा वास्कर, डॉ. अर्जुन चव्हाण, डॉ.पद्मा पाटील, डॉ. पी.एस्.पाटील, डॉ. सौ.आशा मणियार, डॉ.सौ. शोभा निंबाळकर आदि का प्रोत्साहन तथा मार्गदर्शन मिला। इसलिए आप सबका मैं आजन्म ऋणी हूँ।

प्रधानाध्यापक, अध्यापक, शिक्षक-प्रशिक्षक, छात्रों का अच्छा सहयोग मिला। इसलिए मैं आप सब का आभारी हूँ। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध विनम्रता से आपके अवलोकन के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

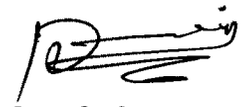

कोल्हापुर। श्री.डवरी डी.ए.

दि. शोध-छात्र

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मुझे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले सभी गुरूजनों, हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य मानता हूँ।

मेरे शोध-निर्देशिका कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी के हिंदी विभाग के प्रपाठक एवं अध्यक्षा डॉ. सौ. देशपांडे सुलोचना श्रीहरी के बहुमोल निर्देशन की यह फलश्रुति है। मैं उनके सहयोग से ही अपना लघु शोध-प्रबंध पूरा कर पाया हूँ। मैं उनका हमेशा ऋणी रहूँगा।

श्रद्धेय-गुरुवर्या हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ.पाटील पद्मा, डॉ. चव्हाण अर्जुन, डॉ. पाटील पांडुरंग, डॉ. निंबाळकर शोभा, डॉ. मणियार आशा, स्व. डॉ. वास्कर आनंद, श्रीमती डॉ. वास्कर पुष्पा आदि के समय समय पर प्राप्त मार्गदर्शन ने मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ती रही। इन सभी का मैं आभारी हूँ।

मेरे आदरणीय माता-पिता, बहन, पत्नी, तथा समाज के सभी सदस्य, गाँववाले यह सभी मेरे इस कार्य में बराबर के हिस्सेदार हैं।, जिन्होंने मुझे पारिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर मुझे प्रोत्साहित किया।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध कार्य के दौरान जिनसे हमेशा प्रेरणा एवं मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलता रहा वे डॉ. देशपांडे श्रीहरी जीं का मैं ऋणी हूँ।

इस अवसर पर मेरे वरिष्ठ सहपाठियों में प्रा. देसाई संजय, प्रा. चिंदगे संजय, डॉ. भँवर भास्कर आदि ने मेरी सहायता करके अनुसंधान कार्य को गतिशील बनाए रखने के लिए प्रोत्साहन दिया तथा उनकी प्रेरणा से ही मैं अपना कार्य पूरा करने में सफल रहा हूँ। साथ ही मेरे सहपाठियों में प्रा. शिंदे संदिप, प्रा. तहसिलदार रसीद आदि।, रा.वि.परुळेकर ग्रंथालय के ग्रंथपाल दिंडे एस.पी. और कर्मचारी इनकी सदिच्छा से ही मेरा यह कार्य संपन्न हुआ। इन सभी का मैं आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के बॅ. खर्डेकर बाळासाहेब ग्रंथालय के सभी कर्मचारियों के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने समय-समय पर मुझे ग्रंथ उपलब्ध करा दिए। साथ ही मुझे प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से सहकार्य किया। टंक लेखन करनेवाले श्री. सुतार शहाजी

BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

ने इस लघु शोध-प्रबंध को सुयोग्य रूप से मुद्रित किया और यह कार्य उन्होंने शीघ्रता से किया, मैं उनका आभारी हूँ। पी.जी.बी.यु.टी.आर. के सभी कर्मचारियों नें योगदान दिया। साथ ही हिंदी अधिविभाग के सभी कर्मचारियों का भी योगदान मिला। उनका मैं ऋणी हूँ।

मिणचे खोरी शिक्षण प्रसारक संस्था के अध्यक्ष श्री. देसाई आर.व्ही. संस्था में कार्यरत प्रधानाध्यापक , सह अध्यापक, अभिभावक शिक्षकेत्तर कर्मचारी, छात्रों आदि का सहयोग मिला। इसलिए मैं आप सब का आभारी हूँ। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूरा करते समय साक्षात्कार प्रश्नावली ली गई थी। साक्षात्कार प्रश्नावली को हल करने में प्रधानाध्यापक, अध्यापक, शिक्षक-प्रशिक्षक, छात्रों ने जो सहायता दिखाई, उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा।

अंत में जिनका मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग मिला उन सभी परिचितों एवं अपरिचितों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए मैं अपना यह लघु शोध-प्रबंध अत्यंत विनम्रता के साथ परिक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

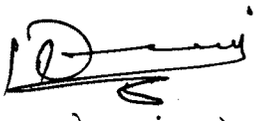

स्थल - कोल्हापुर। (श्री. डवरी दादासाहेब आनंदराव)

दिनांक - शोध-छात्र